ISSN: 2582-7219

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

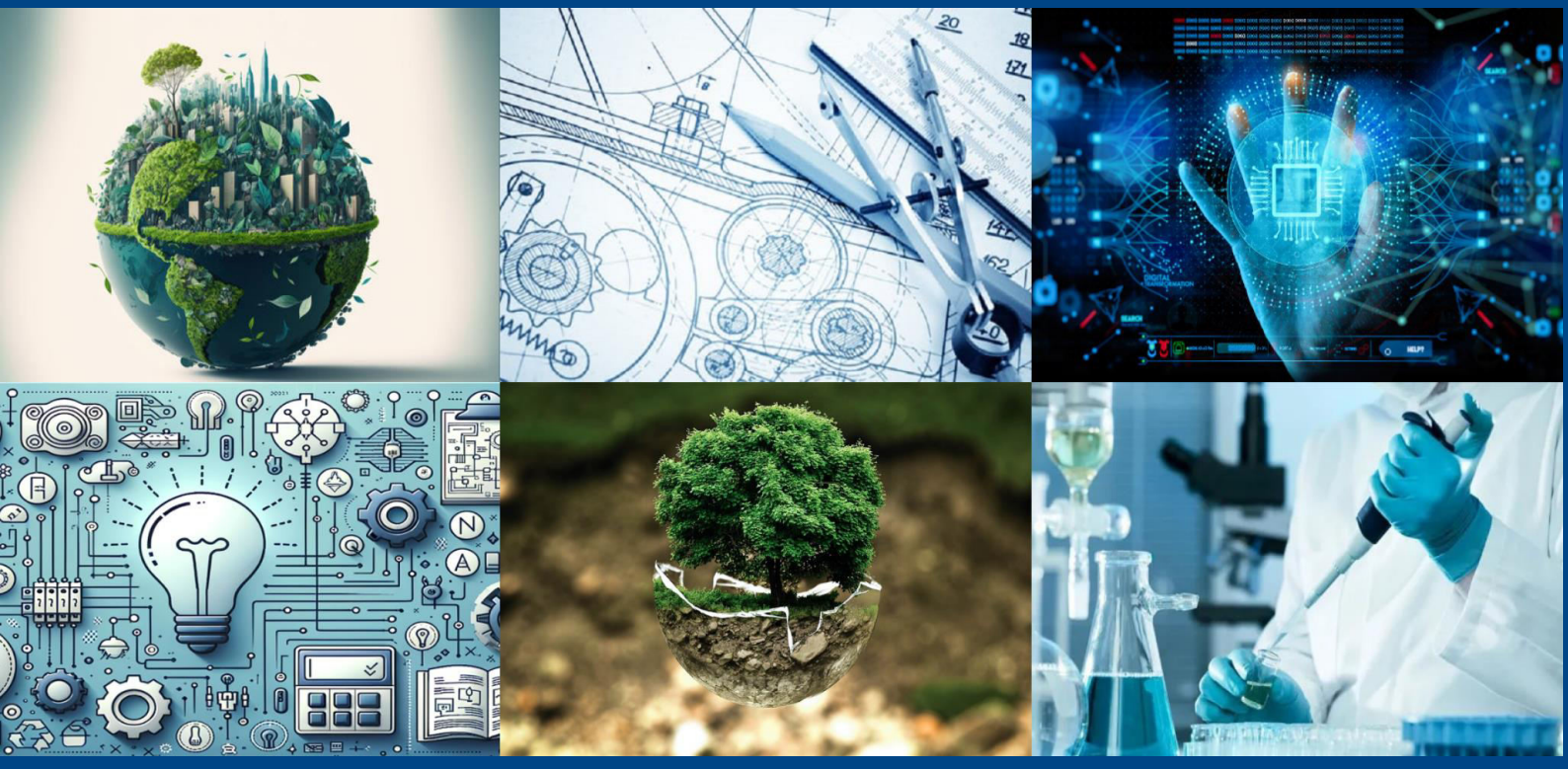

Impact Factor: 8.206 **Volume 8, Issue 5, May 2025**

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 5, May 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0805291

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिला सहभागिता

राजेश कुमार

सहायक आचार्य, इतिहास

राजकीय कन्या महाविद्यालय, सांडवा, (चूरू)

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल राजनैतिक स्वाधीनता की मांग तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक जागृति का भी प्रतीक था, जिसमें समाज के विविध वर्गों ने भागीदारी निभाई। इस आंदोलन में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है, जिन्होंने पारंपरिक सामाजिक सीमाओं को तोड़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला सहभागिता के विविध आयामों का विश्लेषण करना है जिसमें उनकी राजनीतिक, सामाजिक, और वैचारिक भागीदारी शामिल है। इस इस संदर्भ में रानी लक्ष्मीबाई जैसे प्रारंभिक क्रांतिकारी योगदान से लेकर एनी बेसेंट की राजनीतिक चेतना, सरोजिनी नायडू की वाणी शक्ति, अरुणा आसफ अली के क्रांतिकारी नेतृत्व, कस्तूरबा गांधी के सत्याग्रह में योगदान और उषा मेहता द्वारा चलाए गए गुप्त रेडियो जैसे अनेक उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं किसी भी दृष्टिकोण से आंदोलन में पीछे नहीं थीं। उक्त महान हस्तियों के अतिरिक्त यह शोध उन अनगिनत ग्रामीण और शहरी महिलाओं की भी चर्चा करता है, जिनके नाम इतिहास में नहीं दर्ज हैं, परंतु जिन्होंने सत्याग्रह आंदोलनों में भाग लेकर, विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर, जेल यात्राएं करके और गांधीवादी विचारधारा को घर–घर पहुंचाकर राष्ट्रीय आंदोलन को जनांदोलन बनाने में विशेष भूमिका निभाई। इस शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार महिलाओं की यह भागीदारी, उस कालखंड में भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की एक नई लहर लेकर आई। यह शोध विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों, स्वतंत्रता सेनानियों की आत्मकथाओं, समकालीन पत्र–पत्रिकाओं और द्वितीयक स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित है। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता में महिलाओं का योगदान न केवल सहायक था, बल्कि कई अवसरों पर निर्णायक भूमिका में भी रहा। इस योगदान ने स्वतंत्र भारत में महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक समानता के संघर्षों को एक मजबूत आधार प्रदान किया।

मूल शब्द – महिला सहभागिता, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम, महिला सशक्तिकरण

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 5, May 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0805291

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

प्रस्तावना :

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं, नेताओं और आंदोलनों की गाथा नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक जागरण का दस्तावेज भी है, जिसमें समाज के हर वर्ग ने किसी न किसी रूप में भाग लिया। विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका इस आंदोलन का एक ऐसा पक्ष है, जो यद्यपि अत्यंत महत्वपूर्ण था, फिर भी इतिहास में उसे पर्याप्त मान्यता और विस्तार नहीं मिल सका। यह शोध इसी उपेक्षित पक्ष को केंद्र में रखकर स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के बहुआयामी योगदान का विश्लेषण करने का प्रयास है।

भारतीय समाज की पारंपरिक संरचना में महिलाओं को घर और परिवार तक सीमित समझा जाता था। किंतु जब देश को स्वतंत्रता की आवश्यकता हुई, तब इन सामाजिक सीमाओं को तोड़कर महिलाएं न केवल आंदोलनों में सहभागी बनीं, बल्कि कई बार उन्होंने नेतृत्व भी किया। 1857 की क्रांति में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का वीरतापूर्ण योगदान इसकी आरंभिक मिसाल है। इसके बाद के दशकों में स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी क्रमशः संगठित और सशक्त होती चली गई।

महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुआयामी भूमिकाएँ निभाईं किसी ने क्रांतिकारी बनकर अस्त्र उठाया, तो किसी ने सत्याग्रही बनकर जेल यात्राएँ कींय किसी ने सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य किया, तो किसी ने विदेशी वस्त्रों का त्याग करके स्वदेशी आंदोलन को बल दिया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, एनी बेसेंट, अरुणा आसफ अली, विजयलक्ष्मी पंडित, दुर्गा भाभी, उषा मेहता जैसी अनेक महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व और राष्ट्रभक्ति से स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। इसके अलावा हजारों–लाखों ऐसी महिलाएं भी थीं, जिनका नाम इतिहास में नहीं दर्ज हो पाया, किंतु जिन्होंने चुपचाप अपने योगदान से आंदोलन की नींव को मजबूत किया। इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की भागीदारी केवल प्रतीकात्मक या सहायक भूमिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन में बदलने में एक केंद्रीय भूमिका निभाई। उनका यह संघर्ष न केवल राजनीतिक आजादी की प्राप्ति के लिए था, बल्कि यह भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की भी एक प्रारंभिक और सशक्त अभिव्यक्ति थी।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

अध्ययन के उद्देश्य:

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना
- महिला नेताओं के योगदान को उजागर करना
- महिला सहभागिता के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना
- महिलाओं की सहभागिता के आधार पर स्वतंत्रता संग्राम के पुनर्पाठ की आवश्यकता को रेखांकित करना

साहित्य समीक्षा :

1. **विभा चक्रवर्ती (1990)** ''भारतीय महिला और स्वतंत्रता संग्राम'' इस पुस्तक में लेखिका ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी को सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देखा है। उन्होंने ग्रामीण और शहरी महिलाओं की भूमिका की तुलना करते हुए यह सिद्ध किया है कि कैसे आम भारतीय नारी ने भी बिना किसी राजनीतिक प्रशिक्षण के राष्ट्र सेवा में योगदान दिया। यह पुस्तक महिलाओं के योगदान को नारी सशक्तिकरण के आरंभिक चरण के रूप में रेखांकित करती है।
2. **सुचेता कृपलानी** ''My Story'' (आत्मकथा) सुचेता कृपलानी की आत्मकथा एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से यह बताया है कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं को किन सामाजिक और राजनीतिक बाधाओं का सामना करना पड़ा और उन्होंने किस प्रकार उसका सामना किया। यह आत्मकथात्मक दस्तावेज उस दौर की सामाजिक संरचना और महिला सक्रियता की जीवंत झलक प्रदान करता है।
3. **Geraldine Forbes (1996)** "Women in Modern India" यह अंग्रेजी में लिखी गई प्रमुख अकादमिक कृति है, जिसमें फोर्ब्स ने 19वीं सदी से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारतीय महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक स्थिति का समग्र अध्ययन किया है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को एक विकासशील प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है, जो महिला मुक्ति आंदोलनों से जुड़ती है।
4. **उषा शर्मा (2001)** "Role of Women in Freedom Movement" इस ग्रंथ में स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटनाओं में महिलाओं की सक्रियता का विस्तार से वर्णन है। लेखिका ने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी, जैसे आंदोलन संचालन, जन–जागरण, विदेशी वस्त्रों की होली, गुप्तचरों की भूमिका आदि पर विशेष ध्यान दिया है। साथ ही महिला संगठनों के योगदान को भी रेखांकित किया गया है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

5. **कृष्णा बोस (2002)** "An Unusual Autobiography" यह पुस्तक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की भाभी कृष्णा बोस द्वारा लिखी गई है, जिसमें उन्होंने महिला क्रांतिकारियों के अनुभव साझा किए हैं। इसमें विशेष रूप से महिलाओं के दृष्टिकोण से स्वतंत्रता संग्राम की राजनीति, चुनौतियाँ और उनका योगदान सामने आता है। पुस्तक सुभाष चंद्र बोस और महिला सैनिकों की भूमिका को भी गहराई से छूती है।
6. **बार्बरा साउथार्ड (1995)** "The Women*s Movement and Colonial Politics in Bengal: The Quest for Political Rights, Education and Social Reform Legislation, 1919–1939 – यह शोधपरक अध्ययन मुख्यतः बंगाल क्षेत्र पर केंद्रित है, लेकिन इसमें महिला आंदोलन, शिक्षा और राजनीतिक अधिकारों की मांग को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़कर देखा गया है। यह पुस्तक यह दर्शाती है कि किस प्रकार महिलाओं ने राजनीतिक चेतना के साथ–साथ सामाजिक सुधारों की दिशा में भी पहल की।

प्रारंभिक चरण में महिला सहभागिता (1857 की क्रांति और उससे पूर्व) :

भारतीय महिलाओं की स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी का आरंभ 1857 की क्रांति से माना जा सकता है, जिसे 'भारत की पहली स्वतंत्रता की लड़ाई' कहा जाता है। इस क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई का योगदान अविस्मरणीय है। वे केवल एक योद्धा नहीं थीं, बल्कि नारी शक्ति की प्रतीक बनीं। उन्होंने पुरुषों के समान ही रणभूमि में तलवार चलाई, घोड़े पर चढ़कर दुश्मनों से लड़ीं और वीरगति को प्राप्त हुईं। इसी क्रांति में बेगम हजरत महल ने भी अवध में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया। झलकारी बाई, जो रानी लक्ष्मीबाई की सेनापति बनीं, उन्होंने ब्रिटिश सेना को चकमा देकर युद्ध की दिशा बदल दी। इन वीरांगनाओं का योगदान इस बात का प्रमाण है कि भारतीय स्त्रियाँ राष्ट्र की रक्षा के लिए प्राण त्यागने से भी पीछे नहीं रहीं। यह समय महिलाओं की चेतना के उदय का आरंभिक काल था, जब उन्होंने पहली बार सार्वजनिक स्तर पर अपने अधिकारों और राष्ट्रीय जिम्मेदारी को समझा।

19वीं सदी के सामाजिक सुधार आंदोलन और महिला जागरण :

इस युग में अनेक समाज सुधारकों ने महिलाओं की दयनीय दशा को सुधारने के लिए आवाज उठाई। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध में संघर्ष किया, ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया, जबकि महात्मा ज्योतिबा फुले ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विद्यालय खोले। इन सभी आंदोलनों ने समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदलने की दिशा में कार्य किया। इस काल में महिलाएं शिक्षा प्राप्त करने लगीं, आत्मविश्वास जागृत हुआ और उनमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना का विकास हुआ। उन्होंने घर से बाहर निकलना आरंभ किया और समाज सेवा तथा राजनीति में रुचि लेना शुरू किया। यह महिला जागरण

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

का चरण था, जिसने आगे चलकर महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए मानसिक, वैचारिक और सामाजिक आधार प्रदान किया।

20वीं सदी के प्रारंभिक आंदोलन और संगठित महिला भागीदारी :

1905 के स्वदेशी आंदोलन के समय महिलाओं की भागीदारी संगठित रूप में दिखाई दी। उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया, खादी को अपनाया, सार्वजनिक सभाओं में भाग लिया और घरों में चरखा चलाकर आत्मनिर्भरता का संदेश दिया। इस दौर में एनी बेसेंट जैसी विदुषी महिलाओं ने होम रूल आंदोलन के माध्यम से महिलाओं को संगठित करने का प्रयास किया। इस युग में अनेक महिला संगठन उभरे, जैसे भारतीय महिला परिषद, स्त्री सम्मेलन, महिला समाज, इत्यादि। इन संस्थाओं ने महिला शिक्षा, बाल विवाह उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह और स्वराज्य की मांग जैसे मुद्दों पर जनजागरण किया। महिलाओं का यह राजनीतिक रूपांतरण स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार देने में सहायक सिद्ध हुआ।

गांधी युग और महिला सशक्तिकरण का विस्फोट :

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को जन आंदोलन में बदलने का श्रेय महिलाओं को भी दिया। उन्होंने कहा था ''यदि भारत की स्त्रियाँ जाग जाएं, तो स्वतंत्रता केवल कुछ ही दिनों की बात है।'' उनके नेतृत्व में चलाए गए आंदोलनों असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में लाखों महिलाओं ने भाग लिया। कस्तूरबा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलनों में भाग लेकर महिलाओं को प्रेरित किया। सरोजिनी नायडू ने न केवल भाषणों से लोगों को प्रेरित किया, बल्कि कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष भी बनीं। अरुणा आसफ अली ने 1942 में भूमिगत होकर क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व किया और भारत छोड़ो आंदोलन में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। उषा मेहता द्वारा संचालित गुप्त रेडियो सेवा ने आंदोलनकारियों को सूचना और प्रेरणा दी। इन सबने महिला नेतृत्व की शक्ति को सिद्ध किया और समाज में महिला नेतृत्व की स्वीकृति की नींव रखी।

गुमनाम महिलाओं का संघर्ष :

इतिहास में केवल कुछ प्रसिद्ध नाम ही दर्ज हुए हैं, परंतु सच्चाई यह है कि देश के कोने–कोने से असंख्य गुमनाम महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। वे शिक्षित नहीं थीं, न ही राजनैतिक विचारधारा से परिचित थीं, फिर भी उन्होंने राष्ट्रहित में हर प्रकार की चुनौती को स्वीकार किया। वे गाँवों में जुलूसों में चलीं, अपने गहनों का दान दिया, सत्याग्रह किया, जेल गईं और आंदोलन के विचारों को जन–जन तक पहुँचाया।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

इन महिलाओं ने अपने कर्तव्यों को न केवल राष्ट्र के प्रति समझा, बल्कि परंपरागत सामाजिक बंधनों को तोड़कर यह दिखा दिया कि वे केवल घर की लक्ष्मी नहीं, बल्कि राष्ट्र की शक्ति भी हैं। यह वर्ग वह है जिसे इतिहास में पहचान नहीं मिल पाई, परंतु जिनकी सहभागिता के बिना स्वतंत्रता संग्राम अधूरा होता।

महिला सहभागिता का सामाजिक प्रभाव :

महिलाओं की आंदोलन में भागीदारी ने भारतीय समाज की रूढ़ परंपराओं को चुनौती दी। पहले जहाँ महिलाएं पर्दे के भीतर सीमित थीं, वहीं अब वे भाषण देने, आंदोलन चलाने, संगठन बनाने, जेल जाने, रचनात्मक कार्यों में भाग लेने लगीं। यह परिवर्तन केवल राजनीतिक नहीं था, यह सामाजिक क्रांति थी। महिलाओं ने यह साबित किया कि वे केवल सहायक नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता भी बन सकती हैं। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सक्रियता ने आने वाले वर्षों में महिला शिक्षा, मताधिकार, कार्यस्थल पर समान अधिकार, और राजनीति में भागीदारी जैसे मुद्दों को गति दी। यह उनके आत्मसम्मान, आत्मबल और सशक्तिकरण का आरंभिक चरण था।

निष्कर्ष :

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने यह सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्रता केवल पुरुषों का संघर्ष नहीं था। यह पूरे समाज का एक साझा प्रयास था, जिसमें महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई। उनका यह योगदान राजनीतिक मुक्ति के साथ–साथ सामाजिक चेतना और महिला सशक्तिकरण के युग की शुरुआत भी था। दुर्भाग्यवश, स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास लेखन में महिलाओं की भूमिका को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। अधिकांश इतिहास पुरुष नेताओं और उनकी उपलब्धियों तक सीमित रहा है। महिलाओं के योगदान को 'सहायक' या 'भावनात्मक समर्थन' तक सीमित कर प्रस्तुत किया गया है, जबकि सच्चाई यह है कि उन्होंने नेतृत्व, नीति–निर्धारण और संघर्ष के प्रत्येक मोर्चे पर भागीदारी की। यह शोध इस पक्ष को स्पष्ट करना चाहता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका उतनी ही निर्णायक थी जितनी पुरुषों की। समय की आवश्यकता है कि इतिहास लेखन में संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाए और महिला योगदान को उसके यथोचित स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाए।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Basu, Aparna, and Bharati Ray, editors. *Women Struggle: A History of the All India Women's Conference, 1927–2002*. Manohar Publishers, 2003.
2. Chakravarti, Vibha. *Bhartiya Mahila Aur Swatantrata Sangram*. Rastrabhasha Prakashan, 1990.
3. Chatterjee, Partha. *The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories*. Princeton University Press, 1993.
4. Dutta, Kalpana. *Chittagong Armoury Raiders: Reminiscences*. People's Publishing House, 1979.
5. Forbes, Geraldine. *Women in Modern India*. Cambridge University Press, 1996.
6. Mehta, Usha. *Women and the Indian Freedom Struggle*. Reliance Publishing House, 1998.
7. Naidu, Sarojini. *Selected Speeches and Writings of Sarojini Naidu*. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, 1972.
8. Narayan, Indu. *Bhartiya Swatantrata Sangram Mein Nariyon Ki Bhumika*. Lokbharti Prakashan, 1995.
9. Roy, Kumkum. *The Power of Gender and the Gender of Power: Explorations in Early Indian History*. Oxford University Press, 2010.
10. Sharma, Usha. *Role of Women in Freedom Movement*. RBSA Publishers, 2001.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com